पत्र सूचना कार्यालय (रक्षा विंग)
भारत सरकार
****
'हर काम देश के नाम'

नई दिल्लीः आश्विन 26, 1944
मंगलवारः 18 अक्तूबर 2022

गुजरात के गांधीनगर में डेफएकस्पो2022 के दौरान भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद आयोजित; भारत-अफ्रीका रक्षा संबंधों को मजबूत करने का मार्ग प्रशस्त

प्रशिक्षण और सैन्य अभ्यास के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए गांधीनगर घोषणा पत्र को अपनाया गया

रक्षा मंत्री ने अफ्रीकी देशों को भारतीय रक्षा उपकरणों और प्रौद्योगिकियों की छान-बीन करने के लिए आमंत्रित किया; मजबूत भारतीय रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकी प्रणाली अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है

"भारत और अफ्रीका विशेष रूप से हिंद महासागर क्षेत्र में,एक सुरक्षित समुद्री वातावरण सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण हितधारक हैं"

भारत एक पदानुक्रमित विश्व व्यवस्था में विश्वास नहीं करता है; हमारे अंतर्राष्ट्रीय संबंध मानवीय समानता और गरिमा से निर्देशितः श्री राजनाथ सिंह

"संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को एक सतत वैश्विक व्यवस्था के लिए अधिक प्रतिनिधि की आवश्यकता है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और व्यवस्था का सार्वभौमिक रूप से सम्मान किया जाता है"

भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद (आईएडीडी) 18 अक्टूबर 2022 को गुजरात के गांधीनगर में डेफएक्सपो 2022 के दौरान आयोजित किया गया। इस संवाद में भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद की विषयवस्तु'रक्षा और सुरक्षा सहयोग के तालमेल और सुदृढ़ीकरण के लिए रणनीति अपनाना' के विभिन्न पहलुओं को सफलतापूर्वक सामने लाया गया। मुख्य भाषण देते हुए रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद की विषयवस्तु को क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण, साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा और आतंकवादरोध सहित रक्षा जुड़ाव के लिए अभिसरण के नए क्षेत्रों की खोज करने के लिए भारत और अफ्रीकी देशों की अंतर्निहित प्रतिबद्धता के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने भारत और अफ्रीकी देशों को विशेष रूप से हिंद महासागर क्षेत्र में एक सुरक्षित समुद्री वातावरण सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण हितधारक बताया। उन्होंने कहा कि दोनों पक्ष कई क्षेत्रीय

प्रणालियों में मिलकर काम करते हैं, जो साझा सुरक्षा चिंताओं से निपटने में समावेशी और रचनात्मक सहयोग को बढ़ावा देते हैं और शांति एवं समृद्धि के लिए साझा चुनौतियों का समाधान करते हैं।

इस बात पर जोर देते हुए कि भारत और अफ्रीका केसाझा बहुआयामी रक्षा और सुरक्षा सहयोग संबंध हैं, श्री राजनाथ सिंह ने संघर्ष, आतंकवाद और हिंसक चरमपंथ की चुनौतियों से निपटने के लिए अफ्रीका को भारत के समर्थन को दोहराया। उन्होंने कहा, 'भारत शांति, सुरक्षा, स्थिरता, विकास और समृद्धि के लिए अफ्रीकी देशों के साथ एकजुट है। अफ्रीका के साथ हमारी साझेदारी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 2018में युगांडा की संसद में अपने संबोधन के दौरान व्यक्त किए गए दस मार्गदर्शक सिद्धांतों पर केंद्रित है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि अफ्रीका हमारी प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर होगा। हम अफ्रीका के साथ अपने संबंधों को मजबूत और प्रगाढ़ करना जारी रखेंगे। बयान में अफ्रीकी देशों के साथ भारत द्वारा किए जाने वाले विकासात्मक, वाणिज्यिक और प्रौद्योगिकीय साझेदारी के लक्ष्यों के अलावा आतंकवाद और चरमपंथ का मुकाबला करने में क्षमताओं को मजबूत करने, संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों का समर्थन करने और खुले एवं मुक्त महासागरों के लिए काम करने में सहयोग को भी शामिल किया गया है।

रक्षा मंत्री ने भारत-अफ्रीकी संबंधों को आर्थिक, राजनयिक और रक्षा क्षेत्रों को कवर करने वाले बहुआयामी बताया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत और अफ्रीका के बीच एक मजबूत साझेदारी है, जो 'सागर' (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) के सहकारी ढांचे पर आधारित है और इसे'वसुधैव कुटुम्बकम' (विश्व एक परिवार है) के प्राचीन लोकाचार से लिया गया है।

श्री राजनाथ सिंह ने अफ्रीकी देशों को भारतीय रक्षा उपकरणों और प्रौद्योगिकियों की छान-बीन करने के लिए आमंत्रित किया और कहा कि भारत हाल के वर्षों में एक अग्रणी रक्षा निर्यातक के रूप में उभरा है। उन्होंने अपने अफ्रीकी समकक्षों से कहा, “शांति, सुरक्षा और विकास परस्पर संबंधित हैं। क्षेत्र में विकास को सक्षम बनाने के लिए सुरक्षा आवश्यक है। हमने एक मजबूत सार्वजनिक और निजी रक्षा उद्योग सृजित किया है। भारत में एक रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकी प्रणाली बनायी गई है जिसमें प्रचुर मात्रा में तकनीकी जनशक्ति का लाभ है। हमारा रक्षा उद्योग आपकी रक्षा जरूरतों को पूरा करने के लिए आपके काम आ सकता है।”

रक्षा मंत्री का मानना था कि भारत पदानुक्रमित विश्व व्यवस्था में विश्वास नहीं करता है जहां कुछ देशों को दूसरों से श्रेष्ठ माना जाता है। उन्होंने कहा कि भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध मानव समानता और गरिमा के भाव से निर्देशित हैं, जो इसके प्राचीन लोकाचार का एक हिस्सा है। उन्होंने कहा,“हम कलाइन्ट या सैटेलाइट स्टेट बनाने या बनने में विश्वास नहीं करते हैं, और इसलिए, जब हम किसी भी राष्ट्र के साथ साझेदारी करते हैं, तो यह प्रभुत्वसंपन्न समानता और पारस्परिक सम्मान के आधार पर होती है। भारत में संबंध बनाना स्वाभाविक है, हम आपसी आर्थिक विकास की दिशा में काम करते हैं।”

श्री राजनाथ सिंह ने भारत के इस विश्वास की भी पुष्टि की कि विश्वव्यवस्था को और लोकतांत्रिक बनाया जाना चाहिए। यह कहते हुए कि दुनिया के बहुपक्षीय मंचों को वैश्विक

वास्तविकताओं में बदलाव को प्रदर्शित करना चाहिए, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को और अधिक प्रतिनिधि बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया जो इसे अधिक वैधता प्रदान करेगा, इससे एक वैश्विक व्यवस्था को बनाए रखा जा सकता है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और व्यवस्था के सिद्धांतों का सार्वभौमिक रूप से सम्मान किया जाता है।

रक्षा मंत्री ने कोविड-19महामारी के दौरान अफ्रीका को भारत के समर्थन पर प्रकाश डाला। उन्होंने मिशन सागर पहल के माध्यम से उत्कृष्ट क्षमता और सेवा का प्रदर्शन करने के लिए भारतीय नौसेना की सराहना की, जिसने प्रशिक्षण और सहायता के लिए चिकित्सा विशेषज्ञ टीमों को तैनात करने के अलावा आपातकालीन चिकित्सा सामग्री की समय परपूर्ति करने में मदद की। उन्होंने कहा, “कई अफ्रीकी देशों को मानवीय सहायता और आपदा राहत प्रदान करने में भारत पहला उत्तरवादी रहा है।"

श्री राजनाथ सिंह ने भारत और अफ्रीका के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों के इतिहास के बारे में भी विस्तार से बताते हुए कहा कि उपनिवेशवाद के दिनों में पैदा हुई एकजुटता, आपसी भरोसे और विश्वास की भावना सहयोग को आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि भारत अफ्रीकी उपनिवेशवाद के सबसे मजबूत समर्थकों में से एक रहा है और इसने अतीत के नस्लवादी और रंगभेद शासन-काल के अंत के लिए काम किया है।

बाद में गांधीनगर घोषणा पत्र को भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद2022के परिणामी दस्तावेज के रूप में अपनाया गया। इसमें प्रशिक्षण स्लॉट और प्रशिक्षण टीमों की प्रतिनियुक्ति, अफ्रीका के रक्षा बलों के सशक्तीकरण और क्षमता निर्माण, अभ्यास में भागीदारी और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान मानवीय सहायता बढ़ाकर पारस्परिक हित के सभी क्षेत्रों में प्रशिक्षण विस्तारसहयोग बढ़ाने का प्रस्ताव है। भारत ने मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्यन एवं विश्लेषण संस्थान के माध्यम से अफ्रीकी देशों के विशेषज्ञों के लिए फेलोशिप की पेशकश की।

रक्षा और सुरक्षा में भारत-अफ्रीका संबंधों को दी गई उच्च प्राथमिकता को प्रमाणित करते हुए20रक्षा मंत्रियों, सात सीडीएस/सेवा प्रमुखों और आठ स्थायी सचिवों सहित पचास अफ्रीकी देशों ने संवाद में भाग लिया। भारत-अफ्रीका रक्षा संवादके अलावा रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह और रक्षा राज्य मंत्री श्री अजय भट्ट ने दौरे पर आए अफ्रीकी मंत्रियों के साथ बैठक की और रक्षा तथा द्विपक्षीय संबंधों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की।

डेफएक्सपो 2022के एक हिस्से के रूप मेंभारत-अफ्रीका रक्षा संवाद ने अफ्रीकी देशों को घरेलू रक्षा उद्योग की बढ़ती ताकत का प्रदर्शन किया, जो प्रधानमंत्री द्वारा परिकल्पित 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' को साकार करने के राष्ट्र के संकल्प के प्रमुख संचालकों में से एक है। इस बातचीत से हमारे अफ्रीकी साझेदारों की रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ हमारी घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद मिलने की उम्मीद है। कार्यक्रम के दौरान भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद पर एक विशेष आवरण-पृष्ठ और 'भारत-अफ्रीका रक्षा सहयोग: अवसर और चुनौतियां' पर एक पुस्तक का विमोचन किया गया।

भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद को लगातार डेफएक्सपो के दौरान द्विवार्षिक रूप से आयोजित करने के लिए संस्थागत रूप दिया गया था। यह अफ्रीकी देशों और भारत के बीच मौजूदा रक्षा साझेदारी को आगे बढ़ाने और क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण, साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद रोधी जैसे क्षेत्रों सहित पारस्परिक जुड़ाव के लिए अभिसरण के नए क्षेत्रों का अन्वेषण करने का प्रयास करता है।

एबीबी/डीएस